

سُورَةُ الْأَنْفَالِ

Surah 8 — Al-Anfaal (The Spoils of War) · Medinan · 75 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْأَنْفَالِ ۖ قُلِ الْأَنْفَالُ لِلَّهِ وَالرَّسُولِ ۚ
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَصْلِحُوا ۖ ذَاتَ بَيْنِكُمْ ۚ وَأَطِيعُوا اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۚ إِن كُنْتُمْ مُؤْمِنِينَ

(ऐ रसूल) तुम से लोग अनफाल (माले ग़नीमत) के बारे में पूछा करते हैं तुम कह दो कि अनफाल मखसूस खुदा और रसूल के वास्ते है तो खुदा से डरो (और) अपने बाहमी (आपसी) मामलात की इसलाह करो और अगर तुम सच्चे (ईमानदार) हो तो खुदा की और उसके रसूल की इताअत करो

2

إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ إِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَجِلَتْ قُلُوبُهُمْ وَإِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ آيَاتُهُ ۖ زَادَتْهُمْ
إِيمَانًا ۚ وَعَلَىٰ رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُونَ

सच्चे ईमानदार तो बस वही लोग हैं कि जब (उनके सामने) खुदा का जिक्र किया जाता है तो उनके दिल हिल जाते हैं और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाती हैं तो उनके ईमान को और भी ज्यादा कर देती हैं और वह लोग बस अपने परवरदिगार ही पर भरोसा रखते हैं

3

الَّذِينَ يُقِيمُونَ الصَّلَاةَ وَمِمَّا رَزَقْنَاهُمْ يُنْفِقُونَ

नमाज़ को पाबन्दी से अदा करते हैं और जो हम ने उन्हें दिया है उसमें से (राहे खुदा में) खर्च करते हैं

4

أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُمْ دَرَجَاتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

यही तो सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के लिए उनके परवरदिगार के हाँ (बड़े बड़े) दरजे हैं और बख्शिश और इज्जत और आबरू के साथ रोज़ी है (ये माले ग़नीमत का झगड़ा वैसा ही है)

5

كَمَا أَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِن بَيْتِكَ بِالْحَقِّ وَإِنَّ فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ لَكَاذِبُونَ

जिस तरह तुम्हारे परवरदिगार ने तुम्हें बिल्कुल ठीक (मसलहत से) तुम्हारे घर से (जंग बदर) में निकाला था और मोमिनीन का एक गिरोह (उससे) नाखुश था

6

يُجِدُّونَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَمَا تَبَيَّنَ كَأَنَّمَا يُسَاقُونَ إِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُونَ

कि वह लोग हक़ के ज़ाहिर होने के बाद भी तुमसे (स्वाह मास्वाह) सच्ची बात में झगड़ते थे और इस तरह (करने लगे) गोया (ज़बरदस्ती) मौत के मुँह में ढकेले जा रहे हैं

7

وَإِذْ يَعِدُكُمُ اللَّهُ إِحْدَى الطَّائِفَتَيْنِ أَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّونَ أَنَّ غَيْرَ ذَاتِ الشَّوْكَةِ تَكُونُ لَكُمْ وَيُرِيدُ اللَّهُ أَنْ يُحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمَتِهِ ۖ وَيَقْطَعَ دَابِرَ الْكَافِرِينَ

और उसे (अपनी आँखों से) देख रहे हैं और (ये वक्त था) जब खुदा तुमसे वायदा कर रहा था कि (कुफ़ार मक्का) दो जमाअतों में से एक तुम्हारे लिए ज़रूरी है और तुम ये चाहते थे कि कमज़ोर जमाअत तुम्हारे हाथ लगे (ताकि बग़ैर लड़े भिड़े माले ग़नीमत हाथ आ जाए) और खुदा ये चाहता था कि अपनी बातों से हक़ को साबित (क़दम) करें और काफ़िरों की जड़ काट डाले

8

لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبُطْلَ وَلَوْ كَرِهَ الْمُجْرِمُونَ

ताकि हक़ को (हक़) साबित कर दे और बातिल का मटियामेट कर दे अगर चे गुनाहगार (कुफ़ार उससे) नाखुश ही क्यों न हो

9

إِذْ تَسْتَغِيثُونَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ لَكُمْ أَنِّي مُمِدُّكُمْ بِالْفِ ۖ مِنْ الْمَلَائِكَةِ مُرْدِفِينَ

(ये वह वक्त था) जब तुम अपने परवदिगार से फरियाद कर रहे थे उसने तुम्हारी सुन ली और जवाब दे दिया कि मैं तुम्हारी लगातार हज़ार फ़रिशतों से मदद करूँगा

10

وَمَا جَعَلَهُ اللَّهُ إِلَّا بُشْرَىٰ وَلِتَطْمَئِنَّ بِهِ ۖ قُلُوبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللَّهِ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَزِيزٌ حَكِيمٌ

और (ये इमदाद ग़ैबी) खुदा ने सिर्फ़ तुम्हारी खातिर (खुशी) के लिए की थी और तुम्हारे दिल मुतमइन हो जाएँ और (याद रखो) मदद खुदा के सिवा और कहीं से (कभी) नहीं होती बेशक़ खुदा ग़ालिब हिकमत वाला है

إِذْ يُغَشِّيكُمُ النَّعَاسَ أَمَنَةً ۖ مِنْهُ وَيُنْزِلُ عَلَيْكُم مِّنَ السَّمَاءِ مَاءً ۖ لِّيُطَهِّرَكُم بِهِ ۖ وَيُذْهِبَ عَنْكُم رَجَزَ الشَّيْطَانِ وَلِيَرْبِطَ عَلَى قُلُوبِكُمْ وَيُثَبِّتَ بِهِ الْأَقْدَامَ

ये वह वक्त था जब अपनी तरफ से इत्मिनान देने के लिए तुम पर नींद को गालिब कर रहा था और तुम पर आसमान से पानी बरस रहा था ताकि उससे तुम्हें पाक (पाकीजा कर दे और तुम से शैतान की गन्दगी दूर कर दे और तुम्हारे दिल मजबूत कर दे और पानी से (बालू जम जाए) और तुम्हारे क़दम ब क़दम (अच्छी तरह) जमाए रहे

إِذْ يُوحَىٰ رَبُّكَ إِلَى الْمَلَكَةِ أَنِّي مَعَكُمْ فَثَبَّتُوا ۖ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ سَأَلِقَىٰ فِي قُلُوبِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ الرُّعْبَ فَأَضْرِبُوا ۖ فَوْقَ الْأَعْنَاقِ وَأَضْرِبُوا ۖ مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۖ

(ऐ रसूल ये वह वक्त था) जब तुम्हारा परवरदिगार फ़रिश्तों से फरमा रहा था कि मैं यकीनन तुम्हारे साथ हूँ तुम ईमानदारों को साबित क़दम रखो मैं बहुत जल्द काफ़िरों के दिलों में (तुम्हारा रौब) डाल दूंगा (पस फिर क्या है अब) तो उन कुफ़ार की गर्दनो पर मारो और उनकी पोर पोर को चटिया कर दो

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ شَاقُّوا ۖ اللَّهُ وَرَسُولُهُ ۖ وَمَن يُشَاقِقِ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ فَإِنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

ये (सज़ा) इसलिए है कि उन लोगों ने खुदा और उसके रसूल की मुखालिफ की और जो शख्स (भी) खुदा और उसके रसूल की मुखालफ़त करेगा तो (याद रहें कि) खुदा बड़ा सख्त अज़ाब करने वाला है

ذَٰلِكُمْ فَذُوقُوهُ وَأَنَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابَ النَّارِ

(काफ़िरों दुनिया में तो) लो फिर उस (सज़ा का चखो और (फिर आखिर में तो) काफ़िरों के वास्ते जहन्नुम का अज़ाब ही है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِذَا لَقِيتُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ زَحَفَ ۖ فَلَا تُولُوهُمْ الْأَدْبَارَ

ऐ ईमानदारों जब तुमसे कुफ़ार से मैदाने जंग में मुकाबला हुआ तो (खबरदार) उनकी तरफ पीठ न करना

وَمَنْ يُؤْلِهِمْ يَوْمَئِذٍ ۖ دُبْرُهُ ۚ إِلَّا مَتَحَرِّفًا ۖ لِّقِتَالٍ أَوْ مُتَحَيِّزًا إِلَىٰ فِتْنَةٍ ۖ فَقَدْ بَاءَ
بِغَضَبٍ ۖ مِّنَ اللَّهِ وَمَا وَهُ جَهَنَّمُ ۖ وَيُسَّ الْمَصِيرُ

(याद रहे कि) उस शख्स के सिवा जो लड़ाई वास्ते कतराए या किसी जमाअत के पास (जाकर) मौके पाए (और) जो शख्स भी उस दिन उन कुफ़ार की तरफ पीठ फेरेंगा वह यक़ीनी (हिर फिर के) खुदा के ग़जब में आ गया और उसका ठिकाना जहन्नुम ही हैं और वह क्या बुरा ठिकाना है

فَلَمْ تَقْتُلُوهُمْ وَلَكِنَّ اللَّهَ قَتَلَهُمْ ۖ وَمَا رَمَيْتَ إِذْ رَمَيْتَ وَلَكِنَّ اللَّهَ رَمَىٰ ۖ وَلِيُبْلِيَ
الْمُؤْمِنِينَ مِنْهُ بَلَاءً حَسَنًا ۖ إِنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۖ

और (मुसलमानों) उन कुफ़ार को कुछ तुमने तो क़त्ल किया नहीं बल्कि उनको तो खुदा ने क़त्ल किया और (ऐ रसूल) जब तुमने तीर मारा तो कुछ तुमने नहीं मारा बल्कि खुदा खुदा ने तीर मारा और ताकि अपनी तरफ से मोमिनीन पर खूब एहसान करे बेशक खुदा (सबकी) सुनता और (सब कुछ) जानता है

ذَلِكُمْ وَأَنَّ اللَّهَ مُوهِنُ كَيْدِ الْكَافِرِينَ

ये तो ये खुदा तो काफ़िरो की मक्कारी का कमज़ोर कर देने वाला है

إِنْ تَسْتَفْتِحُوا ۖ فَقَدْ جَاءَكُمْ الْفَتْحُ ۖ وَإِنْ تَنْتَهُوا ۖ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ وَإِنْ تَعُودُوا ۖ
نَعُدْ وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا ۖ وَلَوْ كَثُرَتْ وَأَنَّ اللَّهَ مَعَ الْمُؤْمِنِينَ

(काफ़िर) अगर तुम ये चाहते हो (कि जो हक़ पर हो उसकी) फ़तेह हो (मुसलमानों की) फ़तेह भी तुम्हारे सामने आ मौजूद हुई अब क्या गुरूर बाक़ी है और अगर तुम (अब भी मुखतलिफ़ इस्लाम) से बाज़ रहो तो तुम्हारे वास्ते बेहतर है और अगर कहीं तुम पलट पड़े तो (याद रहे) हम भी पलट पड़ेंगे (और तुम्हें तबाह कर छोड़ देंगे) और तुम्हारी जमाअत अगरचे बहुत ज्यादा भी हो हरगिज़ कुछ काम न आएगी और खुदा तो यक़ीनी मामिनीन के साथ है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ أَطِيعُوا ۖ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَلَا تَوَلَّوْا ۖ عَنْهُ وَأَنْتُمْ تَسْمَعُونَ

(ऐ ईमानदारों) खुदा और उसके रसूल की इताअत करो और उससे मुँह न मोड़ो जब तुम समझ रहे हो

21

وَلَا تَكُونُوا ۚ كَالَّذِينَ قَالُوا ۚ سَمِعْنَا وَهُمْ لَا يَسْمَعُونَ

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओ जो (मुँह से तो) कहते थे कि हम सुन रहे हैं हालांकि वह सुनते (सुनाते खाक) न थे

22

ۚ إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ الَّذِينَ لَا يَعْقِلُونَ

इसमें शक नहीं कि ज़मीन पर चलने वाले तमाम हैवानात से बदतर खुदा के नज़दीक वह बहरे गूँगे (कुफ़ार) हैं जो कुछ नहीं समझते

23

وَلَوْ عَلِمَ اللَّهُ فِيهِمْ خَيْرًا ۚ لَاسْمَعَهُمْ ۚ وَلَوْ أَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا ۚ وَهُمْ مُّعْرِضُونَ

और अगर खुदा उनमें नेकी (की बू भी) देखता तो ज़रूर उनमें सुनने की क़ाबिलियत अता करता मगर ये ऐसे हैं कि अगर उनमें सुनने की क़ाबिलियत भी देता तो मुँह फेर कर भागते।

24

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ اسْتَجِيبُوا ۚ لِلَّهِ وَلِلرَّسُولِ إِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيكُمْ ۚ وَاعْلَمُوا ۚ أَنَّهُ ۚ اللَّهُ يَحُولُ بَيْنَ الْمَرْءِ وَقَلْبِهِ ۚ وَأَنَّهُ ۚ إِلَيْهِ تُحْشَرُونَ

ऐ ईमानदार जब तुम को हमारा रसूल (मोहम्मद) ऐसे काम के लिए बुलाए जो तुम्हारी रूहानी ज़िन्दगी का बाइस हो तो तुम खुदा और रसूल के हुक्म दिल से कुबूल कर लो और जान लो कि खुदा वह क़ादिर मुतलिक है कि आदमी और उसके दिल (इरादे) के दरमियान इस तरह आ जाता है और ये भी समझ लो कि तुम सबके सब उसके सामने हाज़िर किये जाओगे

25

وَاتَّقُوا ۚ فِتْنَةً ۚ لَا تُصِيبَنَّ الَّذِينَ ظَلَمُوا ۚ مِنْكُمْ خَاصَّةً ۚ وَاعْلَمُوا ۚ أَنَّ اللَّهَ شَدِيدُ الْعِقَابِ

और उस फितने से डरते रहो जो खास उन्हीं लोगों पर नहीं पड़ेगा जिन्होंने तुम में से ज़ुल्म किया (बल्कि तुम सबके सब उसमें पड़ जाओगे) और यकीन मानो कि खुदा बड़ा सख्त अज़ाब करने वाला है

وَأَذْكُرُوا ۚ إِذْ أَنْتُمْ قَلِيلٌ ۚ مُسْتَضْعَفُونَ فِي الْأَرْضِ تَخَافُونَ أَنْ يَتَخَطَّفَكُمُ النَّاسُ ۚ فَآوَاكُمْ وَأَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهِ ۚ وَرَزَقَكُمْ مِنَ الطَّيِّبَاتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ

(मुसलमानों वह वक्त याद करो) जब तुम सर ज़मीन (मक्के) में बहुत कम और बिल्कुल बेबस थे उससे सहमे जाते थे कि कहीं लोग तुमको उचक न ले जाए तो खुदा ने तुमको (मदीने में) पनाह दी और खास अपनी मदद से तुम्हारी ताईद की और तुम्हें पाक व पाकीज़ा चीज़े खाने को दी ताकि तुम शुक्र गुज़ारी करो

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ لَا تَخُونُوا ۚ اللَّهَ وَالرَّسُولَ وَتَخُونُوا ۚ أَمْنَكُمْ وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ

ऐ ईमानदारों न तो खुदा और रसूल की (अमानत में) ख्यानत करो और न अपनी अमानतों में ख्यानत करो हालाँकि समझते बूझते हो

وَأَعْلَمُوا ۚ أَنَّمَا أَمْوَالُكُمْ وَأَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ عِنْدَهُ أَجْرٌ عَظِيمٌ ۚ

और यकीन जानों कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तुम्हारी आजमाइश (इस्तेहान) की चीज़ें हैं कि जो उनकी मोहब्बत में भी खुदा को न भूले और वह दीनदार है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ إِنْ تَتَّقُوا ۚ اللَّهَ يَجْعَلْ لَكُمْ فُرْقَانًا ۚ وَيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّئَاتِكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللَّهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيمِ

और यकीनन खुदा के हों बड़ी मज़दूरी है ऐ ईमानदारों अगर तुम खुदा से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे वास्ते इम्तियाज़ पैदा करे देगा और तुम्हारी तरफ से तुम्हारे गुनाह का कफ़ारा करार देगा और तुम्हें बख़्श देगा और खुदा बड़ा साहब फज़ल (व करम) है

وَإِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ لِيُثْبِتُوكَ أَوْ يَقْتُلُوكَ أَوْ يُخْرِجُوكَ ۚ وَيَمْكُرُونَ وَيَمْكُرُ اللَّهُ ۚ وَاللَّهُ خَيْرُ الْمَكْرِينَ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब कुफ़ार तुम से फरेब कर रहे थे ताकि तुमको कैद कर लें या तुमको मार डाले तुम्हें (घर से) निकाल बाहर करे वह तो ये तदबीर (चालाकी) कर रहे थे और खुदा भी (उनके खिलाफ) तदबीरकर रहा था

وَإِذَا تُلَىٰ عَلَيْهِمْ آيَاتُنَا قَالُوا ۖ قَدْ سَمِعْنَا لَوْ نَشَاءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هَذَا ۖ إِنَّ هَذَا إِلَّا
أَسْطِيرُ الْأَوَّلِينَ

और खुदा तो सब तदबीरकरने वालों से बेहतर है और जब उनके सामने हमारी आयते पढ़ी जाती हैं तो बोल उठते हैं कि हमने सुना तो लेकिन अगर हम चाहें तो यकीनन ऐसा ही (करार) हम भी कह सकते हैं-तो बस अगलों के क्रिस्से है

وَإِذْ قَالُوا ۖ اللَّهُمَّ إِن كَانَ هَذَا هُوَ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِكَ فَأَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً ۖ مِنْ
السَّمَاءِ ۖ أَوْ أُتِنَا بِعَذَابٍ أَلِيمٍ ۖ

और (ऐ रसूल वह वक्त याद करो) जब उन काफ़िरो ने दुआएँ माँगीं थी कि खुदा (वन्द) अगर ये (दीन इस्लाम) हक़ है और तेरे पास से (आया है) तो हम पर आसमान से पत्थर बरसा या हम पर कोई और दर्दनाक अज़ाब ही नाज़िल फरमा

وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَأَنْتَ فِيهِمْ ۖ وَمَا كَانَ اللَّهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُونَ

हालाँकि जब तक तुम उनके दरमियान मौजूद हो खुदा उन पर अज़ाब नहीं करेगा और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि लोग तो उससे अपने गुनाहो की माफी माँग रहे हैं और खुदा उन पर नाज़िल फरमाए

وَمَا لَهُمْ آلَا يُعَذِّبَهُمُ اللَّهُ وَهُمْ يَصُدُّونَ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوا ۖ أَوْلِيَاءَهُ ۖ إِنَّ
أَوْلِيَاءَهُ ۖ إِلَّا الْمُتَّقُونَ وَلَكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ

और जब ये लोग लोगों को मस्जिदुल हराम (खान ए काबा की इबादत) से रोकते हैं तो फिर उनके लिए कौन सी बात बाक़ी है कि उन पर अज़ाब न नाज़िल करे और ये लोग तो खानाए काबा के मुतवल्ली भी नहीं (फिर क्यों रोकते हैं) इसके मुतवल्ली तो सिर्फ़ परहेज़गार लोग हैं मगर इन काफ़िरो में से बहुतेरे नहीं जानते

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ إِلَّا مُكَاءً ۖ وَتَصْدِيَةً ۖ فَذُوقُوا ۖ الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
تَكْفُرُونَ

और खानाए काबे के पास सीटियाँ तालिया बजाने के सिवा उनकी नमाज़ ही क्या थी तो (ऐ काफ़िरो) जब तुम कुफ़्र किया करते थे उसकी सज़ा में (पड़े) अज़ाब के मज़े चखो

إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ يُنْفِقُونَ أَمْوَالَهُمْ لِيَصُدُّوا ۖ عَنْ سَبِيلِ اللَّهِ ۚ فَسَيَنْفِقُونَهَا ثُمَّ تَكُونُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ۖ ثُمَّ يُغْلَبُونَ ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِلَىٰ جَهَنَّمَ يُحْشَرُونَ

इसमें शक नहीं कि ये कुफ़ार अपने माल महज़ इस वास्ते खर्च करेंगे फिर उसके बाद उनकी हसरत का बाइस होगा फिर आखिर ये लोग हार जाएँगे और जिन लोगों ने कुफ़र एख्तियार किया (क़यामत में) सब के सब जहन्नुम की तरफ हाके जाएँगे

لِيَمِيزَ اللَّهُ الْخَبِيثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ الْخَبِيثَ بَعْضُهُ ۚ عَلَىٰ بَعْضٍ ۚ فَيَرْكُمُهُ ۚ جَمِيعًا ۖ فَيَجْعَلُهُ ۚ فِي جَهَنَّمَ ۚ أُو۟لَٰئِكَ هُمُ الْخٰسِرُونَ

ताकि खुदा पाक को नापाक से जुदा कर दे और नापाक लोगों को एक दूसरे पर रखके ढेर बनाए फिर सब को जहन्नुम में झोंक दे यही लोग घाटा उठाने वाले हैं

قُلْ لِلَّذِينَ كَفَرُوا ۖ إِنْ يَنْتَهُوا ۖ يُغْفَرْ لَهُمْ مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَإِنْ يَعُودُوا ۖ فَقَدْ مَضَتْ سُنَّتُ الْأَوَّلِينَ

(ऐ रसूल) तुम काफ़िरो से कह दो कि अगर वह लोग (अब भी अपनी शरारत से) बाज़ रहें तो उनके पिछले कुसूर माफ़ कर दिए जाएँ और अगर फिर कहीं पलटें तो यक्कीनन अगलों के तरीके गुज़र चुके जो, उनकी सज़ा हुई वही इनकी भी होगी

وَقَتِّلُوهُمْ حَتَّىٰ لَا تَكُونَ فِتْنَةٌ ۚ وَيَكُونَ الدِّينُ كُلُّهُ ۚ لِلَّهِ ۚ فَإِنْ أَنْتَهُوا ۖ فَإِنَّ اللَّهَ بِمَا يَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ

मुसलमानों काफ़िरो से लड़े जाओ यहाँ तक कि कोई फ़साद (बाक़ी) न रहे और (बिल्कुल सारी खुदाई में) खुदा की दीन ही दीन हो जाए फिर अगर ये लोग (फ़साद से) न बाज़ आएँ तो खुदा उनकी कारवाइयों को खूब देखता है

وَإِنْ تَوَلَّوْا ۖ فَأَعْلَمُوا ۖ أَنَّ اللَّهَ مَوْلٰكُم ۚ نِعَمَ الْمَوْلٰى وَنِعَمَ النَّصِيرُ

और अगर सरताबी करें तो (मुसलमानों) समझ लो कि खुदा यक्कीनी तुम्हारा मालिक है और वह क्या अच्छा मालिक है और क्या अच्छा मददगार है

﴿۱﴾ وَأَعْلَمُوا۟ أَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّن شَيْءٍ ۖ فَإِنَّ لِلَّهِ خُمُسَهُۥ ۖ وَلِلرَّسُولِ وَلِذِي الْقُرْبَىٰ
وَالْيَتَامَىٰ وَالْمَسْكِينِ وَأَبْنِ السَّبِيلِ إِن كُنْتُمْ ءَامَنْتُمْ بِاللَّهِ وَمَا أُنْزِلْنَا عَلَىٰ عَبْدِنَا يَوْمَ
الْفُرْقَانِ يَوْمَ التَّقَىٰ الْجَمْعَانِ ۖ وَاللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ

और जान लो कि जो कुछ तुम (माल लड़कर) लूटो तो उनमें का पाँचवाँ हिस्सा मखसूस खुदा और रसूल और (रसूल के) क़राबतदारों और यतीमों और मिसकीनों और परदेसियों का है अगर तुम खुदा पर और उस (ग़ौबी इमदाद) पर ईमान ला चुके हो जो हमने खास बन्दे (मोहम्मद) पर फ़ैसले के दिन (जंग बदर में) नाज़िल की थी जिस दिन (मुसलमानों और काफ़िरों की) दो जमाअतें बाहम गुथ गयी थी और खुदा तो हर चीज़ पर क़ादिर है

إِذْ أَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ الْقُصْوَىٰ وَالرَّكْبُ أَسْفَلَ مِنكُمْ ۖ وَلَوْ تَوَاعَدْتُمْ
لَاخْتَلَفْتُمْ فِي الْمِيعَدِ ۖ وَلَكِنَّ لِّلْقَاضِيِ اللّٰهُ أَمْرًا ۖ كَانَ مَفْعُولًا ۖ لِّيَهْلِكَ مَن هَلَكَ
عَن ۖ بَيِّنَةٍ ۖ وَيَحْيَىٰ مَن حَىٰ ۖ عَن ۖ بَيِّنَةٍ ۖ وَإِنَّ اللَّهَ لَسَمِيعٌ عَلِيمٌ

(ये वह वक्त था) जब तुम (मैदाने जंग में मदीने के) करीब नाके पर थे और वह कुफ़्फ़ार बईद (दूर के) के नाके पर और (काफ़िले के) सवार तुम से नशेब में थे और अगर तुम एक दूसरे से (वक्त क़ी तक्रीर का) वायदा कर लेते हो तो और वक्त पर गड़बड़ कर देते मगर (खुदा ने अचानक तुम लोगों को इकट्ठा कर दिया ताकि जो बात यदनी (होनी) थी वह पूरी कर दिखाए ताकि जो शख्स हलाक (गुमराह) हो वह (हक़ की) हुज्जत तमाम होने के बाद हलाक हो और जो ज़िन्दा रहे वह हिदायत की हुज्जत तमाम होने के बाद ज़िन्दा रहे और खुदा यकीनी सुनने वाला ख़बरदार है

إِذْ يُرِيكَهُمُ اللَّهُ فِي مَنَاكِحَ قَلِيلًا ۖ وَلَوْ أَرَاكَهُمْ كَثِيرًا ۖ لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنزَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ
وَلَكِنَّ اللَّهَ سَلَّمَ ۖ إِنَّهُ ۖ عَلِيمٌ ۖ بِذَاتِ الصُّدُورِ

(ये वह वक्त था) जब खुदा ने तुम्हें ख़्वाब में कुफ़्फ़ार को कम करके दिखलाया था और अगर उनको तुम्हें ज्यादा करते दिखलाता तुम यकीनन हिम्मत हार देते और लड़ाई के बारे में झगड़ने लगते मगर खुदा ने इसे (बदनामी) से बचाया इसमें तो शक़ ही नहीं कि वह दिली ख़्यालात से वाक़िफ़ है

وَإِذْ يُرِيكُمُوهُمْ إِذِ الْتَقَيْتُمْ فِيَ أَعْيُنِكُمْ قَلِيلًا ۖ وَيُقَلِّلُكُمْ فِيَ أَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِيَ اللَّهُ أَمْرًا ۖ
كَانَ مَفْعُولًا ۖ ۚ وَإِلَى اللَّهِ تُرْجَعُ الْأُمُورُ

(ये वह वक्त था) जब तुम लोगों ने मुठभेड़ की तो खुदा ने तुम्हारी आँखों में कुफ़्फ़ार को बहुत कम करके दिखलाया और उनकी आँखों में तुमको थोड़ा कर दिया ताकि खुदा को जो कुछ करना मंज़ूर था वह पूरा हो जाए और कुल बातों का दारोमदार तो खुदा ही पर है

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ إِذَا لَقِيتُمْ فِئَةً ۖ فَاثْبُتُوا ۖ وَانْكُرُوا ۖ اللَّهُ كَثِيرٌ ۖ لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ

ऐ ईमानदारों जब तुम किसी फौज से मुठभेड़ करो तो खबरदार अपने क़दम जमाए रहो और खुदा को बहुत याद करते रहो ताकि तुम फ़लाह पाओ

وَأَطِيعُوا ۖ اللَّهَ وَرَسُولَهُ ۖ وَلَا تَنَازَعُوا ۖ فَتَفْشَلُوا ۖ وَتَذْهَبَ رِيحُكُمْ ۖ وَأَصْبِرُوا ۖ ۚ إِنَّ اللَّهَ مَعَ الصَّابِرِينَ

और खुदा की और उसके रसूल की इताअत करो और आपस में झगड़ा न करो वरना तुम हिम्मत हारोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी और (जंग की तकलीफ़ को) झेल जाओ (क्योंकि) खुदा तो यक़ीनन सब्र करने वालों का साथी है

وَلَا تَكُونُوا ۖ كَالَّذِينَ خَرَجُوا ۖ مِنْ دِيَارِهِمْ بِطَرٍّ ۖ ۚ وَرِئَاءَ النَّاسِ وَيَصُدُّونَ عَن
سَبِيلِ اللَّهِ ۖ ۚ وَاللَّهُ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۖ

और उन लोगों के ऐसे न हो जाओ जो इतराते हुए और लोगों के दिखलाने के वास्ते अपने घरों से निकल खड़े हुए और लोगों को खुदा की राह से रोकते हैं और जो कुछ भी वह लोग करते हैं खुदा उस पर (हर तरह से) अहाता किए हुए है

كَذَّابٍ ءَالٍ فِرْعَوْنَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَفَرُوا ۚ بِآيَاتِ اللَّهِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ

(उन लोगों की हालत) क्रौमे फिरऔन और उनके लोगों की सी है जो उन से पहले थे और खुदा की आयतों से इन्कार करते थे तो खुदा ने भी उनके गुनाहों की वजह से उन्हें ले डाला बेशक खुदा ज़बरदस्त और बहुत सख्त अज़ाब देने वाला है

ذَلِكَ بِأَنَّ اللَّهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِعْمَةً أَنْعَمَهَا عَلَىٰ قَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا ۚ مَا بِأَنْفُسِهِمْ ۚ وَأَنَّ اللَّهَ سَمِيعٌ عَلِيمٌ

ये सज़ा इस वजह से (दी गई) कि जब कोई नेअमत खुदा किसी क्रौम को देता है तो जब तक कि वह लोग खुद अपनी कलबी हालत (न) बदलें खुदा भी उसे नहीं बदलेगा और खुदा तो यक़ीनी (सब की सुनता) और सब कुछ जानता है

كَذَّابٍ ءَالٍ فِرْعَوْنَ ۚ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ كَذَّبُوا ۚ بِآيَاتِ رَبِّهِمْ فَأَهْلَكْنَاهُمْ بِذُنُوبِهِمْ وَأَغْرَقْنَا ءَالَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ ۚ كَانُوا ۚ ظَالِمِينَ

(उन लोगों की हालत) क्रौम फिरऔन और उन लोगों की सी है जो उनसे पहले थे और अपने परवरदिगार की आयतों को झुठलाते थे तो हमने भी उनके गुनाहों की वजह से उनको हलाक कर डाला और फिरऔन की क्रौम को डुबा मारा और (ये) सब के सब ज़ालिम थे

إِنَّ شَرَّ الدَّوَابِّ عِنْدَ اللَّهِ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُونَ

इसमें शक़ नहीं कि खुदा के नज़दीक जानवरों में कुफ़्फ़ार सबसे बदतरिन तो (बावजूद इसके) फिर ईमान नहीं लाते

الَّذِينَ عٰهَدَتْ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُونَ عَهْدَهُمْ فِي كُلِّ مَرَّةٍ ۚ وَهُمْ لَا يَتَّقُونَ

ऐ रसूल जिन लोगों से तुम ने एहद व पैमान किया था फिर वह लोग अपने एहद को हर बार तोड़ डालते हैं और (फिर खुदा से) नहीं डरते

فَإِمَّا تَثَقَّفْنَهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ مِّنْ خَلْفُهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُونَ

तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हाथे चढ़ जाएँ तो (ऐसी सख्त गोशमाली दो कि) उनके साथ साथ उन लोगों का तो अगर वह लड़ाई में तुम्हारे हथ्थे चढ़ जाएँ तो (ऐसी सजा दो की) उनके साथ उन लोगों को भी तितरि बितर कर दो जो उन के पुश्त पर हो ताकि ये इबरत हासिल करें

وَإِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً ۖ فَأَنْذِرْهُم بِذُنُوبِهِمْ عَلَىٰ سَوَاءٍ ۖ إِنَّ اللَّهَ لَا يُحِبُّ الْخَائِنِينَ

और अगर तुम्हें किसी क्रौम की ख्यानत (एहद शिकनी(वादा खिलाफी)) का खौफ हो तो तुम भी बराबर उनका एहद उन्हीं की तरफ से फेंक मारो (एहदो शिकन के साथ एहद शिकनी करो खुदा हरगिज़ दगाबाजों को दोस्त नहीं रखता

وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا ۖ سَبَقُوا ۚ إِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُونَ

और कुफ़ार ये न ख्याल करें कि वह (मुसलमानों से) आगे बढ़ निकले (क्योंकि) वह हरगिज़ (मुसलमानों को) हरा नहीं सकते

وَأَعِدُّوا ۚ لَهُمْ مَا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ ۚ وَمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُونَ بِهِ ۚ عَدُوَّ اللَّهِ

وَعَدُوَّكُمْ وَأَخْرَيْنَ مِنْ دُونِهِمْ لَا تَعْلَمُونَهُمُ اللَّهُ يَعْلَمُهُمْ ۚ وَمَا تُنْفِقُوا ۚ مِنْ شَيْءٍ ۚ

فِي سَبِيلِ اللَّهِ يُوفَّ إِلَيْكُمْ وَأَنْتُمْ لَا تُظْلَمُونَ

और (मुसलमानों तुम कुफ़ार के मुकाबले के) वास्ते जहाँ तक तुमसे हो सके (अपने बाज़ू के) जोर से और बँधे हुए घोड़े से लड़ाई का सामान मुहय्या करो इससे खुदा के दुश्मन और अपने दुश्मन और उसके सिवा दूसरे लोगों पर भी अपनी धाक बढ़ा लेंगे जिन्हें तुम नहीं जानते हो मगर खुदा तो उनको जानता है और खुदा की राह में तुम जो कुछ भी खर्च करोगें वह तुम पूरा पूरा भर पाओगें और तुम पर किसी तरह ज़ुल्म नहीं किया जाएगा

ۚ وَإِنْ جَنَحُوا ۚ لِلسَّلَامِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ ۚ إِنَّهُ ۚ هُوَ السَّمِيعُ الْعَلِيمُ

और अगर ये कुफ़ार सुलह की तरफ माएल हो तो तुम भी उसकी तरफ माएल हो और खुदा पर भरोसा रखो (क्योंकि) वह बेशक (सब कुछ) सुनता जानता है

وَإِنْ يُرِيدُوا ۚ أَنْ يَخْدَعُوكَ فَإِنَّ حَسْبَكَ اللَّهُ ۚ هُوَ الَّذِي أَيْدَكَ بِنَصْرِهِ ۚ
وَيَا الْمُؤْمِنِينَ

और अगर वह लोग तुम्हें फरेब देना चाहे तो (कुछ परवा नहीं) खुदा तुम्हारे वास्ते यकीनी काफी है-(ऐ रसूल) वही तो वह (खुदा) है जिसने अपनी खास मदद और मोमिनीन से तुम्हारी ताईद की

وَأَلْفَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ ۚ لَوْ أَنْفَقْتَ مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا ۖ مَا أَلْفَتَ بَيْنَ قُلُوبِهِمْ وَلَكِنَّ
اللَّهَ أَلْفَ بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّهُ ۚ عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۚ

और उसी ने उन मुसलमानों के दिलों में बाहम ऐसी उलफ़त पैदा कर दी कि अगर तुम जो कुछ ज़मीन में है सब का सब खर्च कर डालते तो भी उनके दिलों में ऐसी उलफ़त पैदा न कर सकते मगर खुदा ही था जिसने बाहम उलफ़त पैदा की बेशक वह ज़बरदस्त हिक्मत वाला है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللَّهُ وَمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ

ऐ रसूल तुमको बस खुदा और जो मोमिनीन तुम्हारे ताबेए फरमान (फरमाबरदार) है काफी है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِينَ عَلَى الْقِتَالِ ۚ إِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ عِشْرُونَ صَابِرُونَ
يَغْلِبُوا ۚ مَا ۚ تَتَيْنِ ۚ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مَا ۚ نَّةٌ ۚ يَغْلِبُوا ۚ أَلْفًا ۚ مِنَ الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ
بِأَنَّهُمْ قَوْمٌ ۚ لَا يَفْقَهُونَ

ऐ रसूल तुम मोमिनीन को जिहाद के वास्ते आमादा करो (वह घबराए नहीं खुदा उनसे वायदा करता है कि) अगर तुम लोगों में के साबित क़दम रहने वाले बीस भी होंगे तो वह दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब आ जायेगे और अगर तुम लोगों में से साबित क़दम रहने वालों सौ होंगे तो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब आ जाएँगे इस सबब से कि ये लोग ना समझ हैं

أَلَنْ خَفَّفَ اللَّهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ أَنَّ فِيكُمْ ضَعْفًا؟ فَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ مَا تُنْتَهُ؟ صَابِرَةً؟
يَغْلِبُوا؟ مَا تُتَيْنَ؟ وَإِنْ يَكُنْ مِنْكُمْ أَلْفٌ؟ يَغْلِبُوا؟ أَلْفَيْنِ بِإِذْنِ اللَّهِ؟ وَاللَّهُ مَعَ
الصَّابِرِينَ

अब खुदा ने तुम से (अपने हुक्म की सख्ती में) तरफ़ीफ (कमी) कर दी और देख लिया कि तुम में यकीनन कमज़ोरी है तो अगर तुम लोगों में से साबित क़दम रहने वाले सौ होंगे तो दो सौ (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे और अगर तुम लोगों में से (ऐसे) एक हज़ार होंगे तो खुदा के हुक्म से दो हज़ार (काफ़िरों) पर ग़ालिब रहेंगे और (जंग की तकलीफों को) झेल जाने वालों का खुदा साथी है

مَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَكُونَ لَهُ؟ أَسْرَى حَتَّى يُتْخَنَ فِي الْأَرْضِ؟ تُرِيدُونَ عَرَصَ الدُّنْيَا
وَاللَّهُ يُرِيدُ آلَاءَ آخِرَةٍ؟ وَاللَّهُ عَزِيزٌ حَكِيمٌ؟

कोई नबी जब कि रूए ज़मीन पर (काफ़िरों का) खून न बहाए उसके यहाँ कैदियों का रहना मुनासिब नहीं तुम लोग तो दुनिया के साज़ो सामान के ख्वाहों (चाहने वाले) हो और खुदा (तुम्हारे लिए) आख़िरत की (भलाई) का ख्वाहों है और खुदा ज़बरदस्त हिक्मत वाला है

لَوْلَا كِتَابٌ؟ مِّنَ اللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ فِيمَا أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ؟

और अगर खुदा की तरफ से पहले ही (उसकी) माफ़ी का हुक्म आ चुका होता तो तुमने जो (बदर के कैदियों के छोड़ देने के बदले) फिदिया लिया था

فَكُلُوا؟ مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَالًا؟ طَيِّبًا؟ وَاتَّقُوا؟ اللَّهَ؟ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ؟

उसकी सज़ा में तुम पर बड़ा अज़ाब नाज़िल होकर रहता तो (ख़ैर जो हुआ सो हुआ) अब तुमने जो माल ग़नीमत हासिल किया है उसे खाओ (और तुम्हारे लिए) हलाल तय्यब है और खुदा से डरते रहो बेशक खुदा बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

يَا أَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّمَنْ فِي أَيْدِيكُمْ مِّنَ الْأَسْرَىٰ إِن يَعْلَمِ اللَّهُ فِي قُلُوبِكُمْ خَيْرًا؟ يُؤْتِكُمْ
خَيْرًا؟ مِّمَّا أَخَذَ مِنْكُمْ وَيَغْفِرَ لَكُمْ؟ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ؟

ऐ रसूल जो कैदी तुम्हारे कब्जे में है उनसे कह दो कि अगर तुम्हारे दिलों में नेकी देखेगा तो जो (माल) तुम से छीन लिया गया है उससे कहीं बेहतर तुम्हें अता फरमाएगा और तुम्हें बख़्श भी देगा और खुदा तो बड़ा बख़्शने वाला मेहरबान है

وَأِنْ يُرِيدُوا ۚ خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا ۚ اللَّهُ مِنْ قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۚ وَاللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ

और अगर ये लोग तुमसे फरेब करना चाहते हैं तो खुदा से पहले ही फरेब कर चुके हैं तो (उसकी सज़ा में) खुदा ने उन पर तुम्हें क़ाबू दे दिया और खुदा तो बड़ा वाक़िफ़कार हिकमत वाला है

إِنَّ الَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَهَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنْفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ ءَاوَوْا ۚ وَنَصَرُوا ۚ أُو۟لَئِكَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَلَمْ يَهَاجِرُوا ۚ مَا لَكُمْ مِّنْ وَلِيَّتِهِم مِّن شَيْءٍ حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا ۚ ۚ وَإِنْ اُسْتَنْصَرُوكُمْ فِي الدِّينِ فَعَلَيْكُمُ النَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍ ۚ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيثَاقٌ ۚ ۚ وَاللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ۚ

जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और अपने अपने जान माल से खुदा की राह में ज़िहाद किया और जिन लोगों ने (हिजरत करने वालों को जगह दी और हर (तरह) उनकी ख़बर गीरी (मदद) की यही लोग एक दूसरे के (बाहम) सरपरस्त दोस्त हैं और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत नहीं की तो तुम लोगों को उनकी सरपरस्ती से कुछ सरोकार नहीं-यहाँ तक कि वह हिजरत एख्तियार करें और (हाँ) मगर दीनी अम्र में तुम से मदद के ख्वाहों हो तो तुम पर (उनकी मदद करना लाज़िम व वाज़िब है मगर उन लोगों के मुक़ाबले में (नहीं) जिनमें और तुममें बाहम (सुलह का) एहदो पैमान है और जो कुछ तुम करते हो खुदा (सबको) देख रहा है

وَالَّذِينَ كَفَرُوا ۚ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةً ۚ فِي الْأَرْضِ
وَفَسَادٌ ۚ كَبِيرٌ ۚ

और जो लोग काफ़िर हैं वह भी (बाहम) एक दूसरे के सरपरस्त हैं अगर तुम (इस तरह) वायदा न करोगे तो रूए ज़मीन पर फ़ितना (फ़साद) बरपा हो जाएगा और बड़ा फ़साद होगा

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۚ وَهَاجَرُوا ۚ وَجَاهَدُوا ۚ فِي سَبِيلِ اللَّهِ وَالَّذِينَ ءَاوَوْا ۚ وَنَصَرُوا ۚ أُو۟لَئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ ۚ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ ۚ وَرِزْقٌ ۚ كَرِيمٌ ۚ

और जिन लोगों ने ईमान कुबूल किया और हिजरत की और खुदा की राह में लड़े भिड़े और जिन लोगों ने (ऐसे नाज़ुक वक़्त में मुहाजिरीन को जगह दी और उनकी हर तरह ख़बरगीरी (मदद) की यही लोग सच्चे ईमानदार हैं उन्हीं के वास्ते मग़फ़िरत और इज़्ज़त व आबरु वाली रोज़ी है

وَالَّذِينَ ءَامَنُوا ۖ مِنۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوا ۖ وَجَاهَدُوا ۖ مَعَكُمْ فَأُوۡلَٓئِكَ مِنكُمْ ۖ
 وَأُوۡلَٓئِكَ ۖ الْأَرْحَامُ بَعْضُهُمْ أَوْلَىٰ بِبَعْضٍ ۖ فِى كِتَابِ ٱللَّهِ ۖ إِنَّ ٱللَّهَ بِكُلِّ شَىْءٍ
 عَلِيمٌۭ

और जिन लोगों ने (सुलह हुदैबिया के) बाद ईमान कुबूल किया और हिजरत की और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया वह लोग भी तुम्हीं में से हैं और साहबाने क़राबत खुदा की किताब में बाहम एक दूसरे के (बनिस्बत औरों के) ज्यादा हक़दार हैं बेशक़ खुदा हर चीज़ से ख़ूब वाक़िफ़ हैं